ॐ

संस्करण : अप्रैल २०१०, संवत् २०६७

मूल्य : १० रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

ॐ

वेद भारती

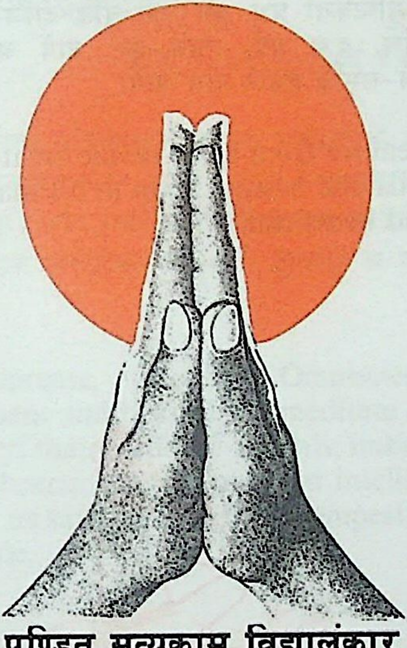

पण्डित सत्यकाम विद्यालंकार

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रन्तन्न आसुव ॥ ऋक्. ५.८२.५

हे सृष्टिकर्ता प्रभु, हमें ऐसी बुद्धि दीजिये कि हमारे दुर्गुण, दु:ख दर्द, हमसे छूट जायें और सद्‌गुण, सुख–समृद्धि हमारे पास आये।

Remove from us, O divine creator, all the evils and bestow upon us all that is noble and beneficial.

भुर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

ऋक् .३.६२.१०, यजु .३६.३,

हम जगत् पिता सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान् के उस दोषदाहक तेज पर ध्यान लगायें; हृदय में धारण करे, जो हमारी बुद्धि और हमारे कर्मों को सन्मार्ग पर प्रेरित करे, और हमें भवसागर के आँधी तूफानों से पार करे।

Lord Supreme, you are Omniscient, Omnipresent and blissful; we meditate on your glory, that wards off all evils; imbibe it in our hearts; may it guide our intellect and steer us safely through the tempest of life's battle.

स नः पितेव सूनवे अग्ने सूपायनो भव
सचस्वा नः स्वस्तये।। ऋक्. १.१.८.

हे प्रभु, जैसे पुत्र के लिये पिता सुलभ होता है, वैसे आप हमारे लिये सहज प्राप्त होओ और कल्याण के लिये तत्पर रहो।

O Lord, be into us easy of access, as a father to his son, and be ever eager for our welfare.

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभि-
र्व्यशेम देवहितंयदायुः ।। ऋक्. १.८९.८

हे विद्व जन; सत्कर्म करने वाले भक्तजन; विनति है कि हम क नों से मंगलमय बात सुनते रहें; आंखों से मंगलक ारी दृश्य देखते रहें। एवं स्वस्थ तन से, मन से ईश्वर निर्धारित कार्य करते हुए पूरी आयु का सेवन कर सकें।

O divine powers, and persons performing sacred deeds, bless us that we may see with our eyes only what is beneficial; and while engaged in the service of supreme Lord, enjoy full term of life with firm limbs and sturdy bodies.

उतेदानीं भगवन्तः स्याम
उत प्रपित्व उत मध्ये अन्हाम् ।
उतोदिता सूर्यस्य
वयं देवानां सुमतौ स्याम ।

ऋक् : ६.४१.४ अथर्व : ३.१६.४

हे परमैश्वर्यवान् प्रभु, हम आज, प्रातः हो या मध्याह्न, सूर्य की उदय वेला हो या अस्त वेला, सर्वदा प्रभु कृपा से भाग्यशाली रहें। सभी दिव्यशक्तियों की कृपा हम पर बनी रहे, उनकी अनुकूलता और कृपा के हम भागीदार रहें।

May we, at this hour, be fortunate, also in the forenoon or at mid-day, or at sun-rise; may we, O bounteous Lord, be happy in the loving kindness of all divine powers.

सखायो ब्रह्म वाहसे ऽर्चत प्र च गायत ।
स हि नः प्रमतिर्मही ।।

ऋक् : ६.४५.४

मित्रो ईश्वर स्तुति से भरे मन्त्र और गीतों का गायन करो; प्रभु का गुण गान करो। क्योंकि वही हमारी बुद्धि को निर्मल और प्रखर बनाता है।

Offer worship and praises, friends, to Him who is worthy to be pleased by prayers; for verify, He is our great providence.

अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णाविदज्जरितारम् ।
मृला सुक्षत्र मृलय ।। (ऋक् : ७.८९.४)

अगाध जल में खड़े हुए भी तेरे भक्त को प्यास सता रही है; हे दयालु प्रभु, अब दया करो, मेरी तृष्णा शान्त करो।

Thirst distresses your worshipper, though he stands in the midst of water, bless a O' saviour, mercy Lord !

स्वस्तिपन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताऽघ्नता जानता सं गमेमहि ।।

ऋक्० ५.५१.१५

हम सूरज–चांद की तरह पुनः पुनः; ज्ञानपूर्वक किसी के कार्य में बाधा डाले बिना निरन्तर कल्याण मार्ग पर सबसे सहयोग करते हुए चलते रहें।

May we uns-wervingly follow the path of duty as do the sun and moon; in harmony with each other; without hindering any; giving all with love; and knowing the wish of supreme lord.

अग्निमीले पुरोहितं,
यज्ञस्य देव मृत्विजम्,
होतारं रत्न धातमम् ।। ऋक्. १.१.१.

हे परम ज्योतिर्मय, विश्व यज्ञ के प्रणेता, दिव्य, शाश्वत नियमों के संचालक एवं सब ज्योतिर्मय लोकों के धारणकर्ता प्रभु, हम आपकी आराधना करते हैं ।

We worship you O' adorable Lord, the high priest of cosmic sacrificial activities, the conductor of eternal laws, and who feeds and sustains all the luminious realms of the universe.

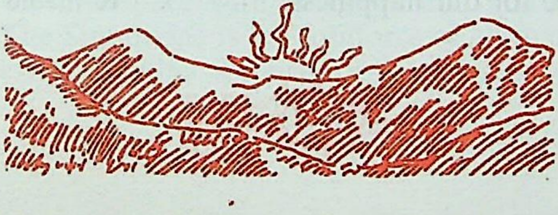

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु
शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु
शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ऋक्. ७.३५.८

ज्योतिपुंज सूर्य हमें सुख–शान्ति देता हुआ उदित हो; चारों दिशाएँ हमारे लिये सुख–शान्तिकारक हों। अचल पर्वत हमें सुख शान्ति दें, समुद्र सुख–शान्ति दे, नदियां सुख–शान्ति दें।

May the sun with extensive radiance rise for our happiness; may the four quarters of the horizon be auspicious to us. May the firm-set mountains bless us for our happiness; may the rivers, may the waters be for our happiness. R 7.35.8

चित्रं देवाना मुदगादनीकं
चक्षुर्मित्रस्य वरुण स्याग्नेः।
आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं
सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।।

ऋक् : १.११५.१.

समस्त विश्व को ऊर्जा और प्रकाश देने वाली दिव्य शक्तियों के ज्योति–स्रोत, सर्वद्रष्टा सूर्य का उदय हुआ है। उसकी उज्ज्वल धरती, आकाश, अन्तरिक्ष पर छा गयी हैं। सूर्य ही सब चेतन–अचेतन जगत् की आत्मा है–जीवन शक्ति है।

Yonder has risen, with wonderful divine effulgence, the eye of the world; the source of life-energy and brilliance. He has filled the interspace with his glory and grace. The Sun-divine is the soulforce of all that exists, whether it moves or is static.

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवानां यथा सदमिद् वृधे, असन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥

ऋक् : १.८९.१.

हे प्रभु, विनति है कि हमारे पास चारों ओर से मंगलकारी, स्वतन्त्र चिन्तन से प्रेरित, उद्बोधक विचार और कर्म आते रहें। और दिव्य शक्तियां दिन प्रति दिन बिना विघ्न बाधा के हमारी रक्षा करती हुई हमें सन्मार्ग पर चलाती रहें।

May auspicious, never-failing elevating works and thoughts, not produced with any compulsion, be received by us from all directions. May the divines grant us protection day after day, without any obstruction in our progress.

त्र्यम्बकं यजामहे
सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धना–
न्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ऋक्. ७.५९.१२

हम परम यशस्विनी, सुखसंपत्तिदात्री त्रिलोक माता की वन्दना करते हैं और विनय करते हैं कि हम मृत्यु द्वारा देह बन्धन से जब भी मुक्त हों तो डालपर पके हुए फल की तरह सहज मुक्ति मिल जाये एवं यह भी विनति है कि अमृत पथ के अधिकारी सदा बने रहें।

We worship the mother of three regions, with her fragrant fame, and the augmenter of prosperity, may I be liberated from death, like the ripe cucumber from its stolk, but not bereft of immortality.

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ।।

ऋक्. १०.१०३.१३

आगे बढ़ो, विजय श्री प्राप्त करो, सर्वजयी प्रभु तुम्हें सुख सौभाग्य प्रदान करे। तुम्हारी भुजाओं में उग्र शक्ति रहे, जिससे तुम कभी पराजित न होओ।

Brave men, advance conquer. May invincible Lord grant you happiness and prosperity. May your arms be strong; never to be defeated by adversities.

उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगात्,
अप प्रागात्तम आ ज्योतिरेति ।
आरैक् पन्थां यातवे सूर्याय,
आगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ॥

ऋक्. १.११३.१६

मनुष्यो, उठो हमारे लिये प्राणदाता सूर्य आ गया, अंधेरा छंट गया, उषा वेला की ज्योति प्रकट हो गयी है। उसने सूर्य की यात्रा का मार्ग प्रशस्त कर दिया। हम ऐसे स्थल पर आ गये हैं, जहां से जीवन नयी ताज़गी लेकर नया मोड़ ले सकता है।

Arise o man, our life is revived again. Darkness has passed away. Dawn has opened a path for the sun to travel; we have arrived at a stage where we may start life with renewed energy and take on new projects with vigour and zeal.

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनासि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासत ।।

ऋक्. १०.१९१.२

तुम सब साथ चलो, मिल कर बात करो, तुम्हारा मन एक ही भावना से प्ररित हो, अपने मेधावी पूर्वजों की तरह कल्याण कार्यों में जीवन सपर्पित करते रहो।

O citizens of the world! Live in harmony and concord. Be organised and co-opertive. Speak with one voice and make your resolutions with one mind. As our ancient saints and seers, leaders and preceptors Have performed their duties righteously, Similiarly, you will not falter to execute your duties.

यो जागार तमृचः कामयन्ते,
यो जागार तमु सामानि यन्ति ।
यो जागार तमयं सोम आह,
तवाहमस्मि सख्ये न्योकः ।।

ऋक् : ५.४४.१४

जो अपने विवेक से प्रभु प्रेम में जागृत रहता है, उसे ही वैदिक ऋचाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। साम संगीतों का अर्थ भी वही हृदयंगम कर सकता है। उसी जागरुक साधक को प्रभु आश्वस्त करते हैं; मैं तेरा सखा बनकर सदा तेरे हृदय में निवास करता हूं।

The pious soul who is ever awake in God is loved by divine hymns, the sacred songs seek him; Addressing him the Blissful Lord assures, "I shall ever be your friend, fast and true."

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्
द्राघीयांसमनुपश्येत पन्थाम् ।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा-
अन्यमन्यमुपतिष्ठन्त रायः ॥

ऋक् : १० : ११७ : ५ :

धनी को चाहिये कि वह याचना करने वाले निर्धन व्यक्ति को अवश्य दान दे; जीवन का मार्ग बहुत लंबा है, इस पर विचार करे, ध्यान रखे; संपत्ति रथ के चक्र की तरह ऊपर नीचे घूमती रहती है। एक से दूसरे के पास जाती रहती है।

A rich man should give unto the needy; he should seriously consider that he has to traverse long journey of life; Like the wheels of a chariot riches run round and round, now going to one and now to another.

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि
चित्ति दक्षस्य सुभगत्वम् अस्मे,
पोषं रयीणाम् अरिष्टिं तनूनां
स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम ।

ऋक् २.२१.६

हे ऐश्वर्यशाली प्रभु, आप हमें श्रेष्ठतम एश्वर्य दें, मनोबल दें, सौभाग्य वृद्धि करें, शरीर में रोग रहित सामर्थ्य दें, वाणी में मिठास दें, जिससे हमारा जीवन प्रतिदिन सुख=समृद्धि के मार्ग पर चलता रहे।

O resplendent Lord, bless us with the best of treasures, the spirit of ability and fortune. May we obtain from you an abundance of wealth, security of person, sweetness of speech and auspiciousness of days.

R 2.21.6

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत,
द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन,
शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः ।।

ऋक्. १०.१८.२

मृत्यु भय को मिटाते चलो; दीर्घ आयु प्राप्त करो; सन्तान से, धन से सम्पन्न बनो। मनुष्यो, शुद्ध, पवित्र, यज्ञमय कल्याण कार्य में समर्पित जीवन का मार्ग अपनाओ।

O performers of sacred works, may you proceed forward, effacting the footsteps of death and prolonging your span of life. May you be dilligent in your sacrificial works; may you enrich yourself with progeny and affluence and may be pure in mind and clean in body.

उतदेवा अवहितं, देवा उन्नयथा पुनः ।
उतागश्चक्रुषं देवाः, देवा जीवयथा पुनः ।

ऋक्. १०.१३७.१

ज्ञानी, समर्थ मनुष्यो, नीचे गिरे लोगों का पुनः उद्धार करो; उन्हें पापाचार से हटाकर स्वस्थ उपयोगी जीवन बिताने योग्य बनाओ।

Ye enlightned men, uplift once more- the fallen, degraded and forgotten, Raise them who have sinned, pray for their elevation. Enable them to stand on their own self.

समानो मंत्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभि मंत्रये वः
समानेन, वो हविषा जुहोभि ।।३।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।४।।

ऋक् . १० . १९१ . ३ . ४

तुम्हारा लक्ष्य एक हो ; सभा स्थल एक हो ; एक ही दिशा में सहयोग की भावना से चिन्तन करो। मैंने तुम्हें एक ही लक्ष्य दिया है, एक ही के प्रति समर्पण होने की बुद्धि दी है। एक मन, एक हृदय से सहयोग पूर्वक रहोगे तो सुख शान्ति आनन्द पूर्णायु भोगोगे।

May your aim be common; your assembly common; common be your minds and thoughts. A common purpose do I lay before you; and worship with your common oblation. Common be your aim, and your hearts united; Your minds be one so that all may happily live together.

R. X. 191.4

संघड विद्या सभा ट्रस्ट : एक परिचय

संस्थापक :–श्री गोवर्धन जी शास्त्री, भू० पू० प्रधानाध्यापक गुरुकुल कांगडी।
विशेष अनुदान :–श्री जी० बी० के० हूजा जी, भू० पू० कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय। संस्थापक के सुपुत्र, अनुदान : १ लाख रुपया
लक्ष्य: वैदिक सिद्धान्तों को जनसाधारण तक पहुंचाना।

संस्थापक श्री गोवर्धनजी गुरुकुल कांगड़ी में ६–७ वर्ष मुख्याध्यापक रहे।

श्री शास्त्रीजी एक अदम्य शक्ति के पुरुष थे। एक आदर्श पिता आदर्श प्राध्यापक तथा महान् शिक्षा शास्त्री के रूप में सदैव स्मरण किये जाते रहेंगे। श्री शास्त्री जी के सुयोग्य पुत्र श्री बलभद्र कुमार हूजा जिन्होने सदैव अपने पिताश्री के चरण चिन्हों पर चलते हुए गुरुकुल के सम्बन्ध में संजोये गये शास्त्री जी के स्वप्न को सजीव किया।

श्री शास्त्री जी भारत में सर्वप्रथम विज्ञान में भौतिकी एवं रसायन दो पुस्तकों को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया था।

संघड विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर द्वारा सम्मानित प्रो० गोवर्धन पुरस्कार के विजेता

१९८१	श्री आचार्य राम प्रसाद वेदालंकार	हरिद्वार
१९८२	डाक्टर भवानी लाल भारतीय	चण्डीगढ़
१९८३	पण्डित विश्वनाथ	देहरादून
१९८४	विद्यामार्तण्ड पण्डित सत्यकाम विद्यालंकार	बम्बई
१९८५	वेदमार्तण्ड पण्डित भगवद्दत्त	हरिद्वार
	(१) वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत	हरिद्वार
१९८६	(२) लाला संतराम बी० ए०	नई दिल्ली

संघड विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर के प्रकाशन

१९८१	जीवन ज्योति	वेदमंत्र संग्रह	प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी
१९८२	मणिमाला		
	द्वितीय रश्मि	वेदमंत्र संग्रह	प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी
१९८३	तृतीय रश्मि	वेदमंत्र संग्रह	प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी
१९८४	चतुर्थ रश्मि	स्वामी दयानंद का शिक्षा दर्शन	श्री बलभद्र कुमार हूजा
	पंचम रश्मि	स्वामी दयानंद का राज दर्शन	श्री बलभद्र कुमार हूजा
	षष्ठम रश्मि	सरल व्यवहार भानु	श्री जगदीश विद्यालंकार
	सप्तम रश्मि	वेद मंत्र संग्रह	प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी
१९८५	अष्टम रश्मि	ब्रह्मचर्येणतपसा	श्री बलभद्र कुमार हूजा
	नवम रश्मि	वेद सौरभ	विद्यामार्तण्ड पण्डित सत्यकाम विद्यालंकार
	दशम रश्मि	वैदिक संध्या एवं अग्निहोत्र	विद्यामार्तण्ड पण्डित सत्यकाम विद्यालंकार
	ग्यारहवीं रश्मि	वेद सुभाषित	विद्यामार्तण्ड पण्डित सत्यकाम विद्यालंकार
१९८७	बारहवीं रश्मि	राय बहादुर ठाकुर दत्त धवन द्वारा ऋग्वेद के संगच्छध्वम् मंत्र की व्याख्या	प्रो० नारायण शर्मा
	तेरहवीं रश्मि	वेद भारती	विद्यामार्तण्ड पण्डित सत्यकाम विद्यालंकार

अभिनन्दन एवं वरदान

इस मंगलमय अवसर पर प्रस्तुत अभिनन्दन पत्रिका द्वारा आप हमारी शुभकामनाओं के साथ परम प्रभु की पवित्र वाणी से उद्भूत वैदिक ऋचाओं का प्रेरणात्मक आशीर्वाद भी ग्रहण कर रहे हैं ।

हमारा विनम्र निवेदन है कि पत्रिका में प्रस्तुत गायत्री मंत्र और महामृत्युंजय मन्त्र के साथ अन्य सभी मंत्रों को हृदयंगम भी कीजिये ।

इस ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना तथा उद्बोधन के मंत्रो का नित्य प्रति पाठ आपको सुख–शान्ति समृद्धि का वरदान देगा ।

संस्कृत से अनभिज्ञ होने के कारण जो वैदिक ऋचाओं का अभिप्राय नहीं समझ सकें तो हिन्दी–अंग्रेजी भाष्य भी दिया गया है। अर्थ के साथ मंत्रजाप बहुत ही सार्थक होगा।

सत्यकाम विद्यालंकार

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बँक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्यावाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS